**26-09-2012**

# महिला किसान पाठशाला का आयोजन

जींद, 26 सितम्बर (ब्यूरो): ललितखेड़ा गांव में बुधवार को पूनम मलिक के खेत में महिला किसान पाठशाला का आयोजन हुआ। महिलाओं ने पाठशाला में कीट सर्वेक्षण के बाद कीट बही खाता तैयार किया गया।

कीट सर्वेक्षण के साथ-साथ महिलाओं ने कपास के पौधों, फूलों, टिंडों व बोकियों की गिनती कर पौधों का भी बही खाता तैयार किया। महिलाओं ने 6 ग्रुप बनाकर 10-10 पौधों का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण के बाद महिलाओं ने जामुन के पेड़ के नीचे बैठकर चार्ट पर अपना बही खाता तैयार किया। मास्टर ट्रेनर अंग्रेजो ने सर्वेक्षण के बाद तैयार किए गए आंकड़ों की तरफ इशारा करते हुए बताया कि कपास के इस खेत में इस सप्ताह शाकाहारी कीटों की संख्या नामात्र है। इस सप्ताह फसल में लाल व काला बानिया ही नजर आए हैं।

*ट्रेनर के साथ विचार-विमर्श करती महिलाएं तथा कपास की फसल में कीट सर्वेक्षण करती महिलाएं।* (सुनील)

पूनम मलिक ने महिलाओं को बताया कि उन्होंने कीट सर्वेक्षण के दौरान खेत में लाल व काला बानिए के अंडे भी देखे हैं। सविता ने महिलाओं द्वारा किए गए कपास के पौधों के सर्वेक्षण के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इस प्रयोगाधीन खेत में एक पौधे पर औसतन 80 टिंडे, 2 फूल व 22 बोकियां मिली हैं। मीना मलिक ने बताया कि पाठशाला में आने वाली महिलाओं को अभी तक अपने खेत में एक बूंद भी कीटनाशक के प्रयोग की जरूरत नहीं पड़ी है। महिलाओं ने बताया कि उनके लिए बड़ी खुशी की बात है कि उन्होंने अपनी मेहनत के बलबूते खुद का ज्ञान पैदाकर कीटनाशकों को धूल चटा दी है।

## टी.वी. के माध्यम से सिखाएंगी जहर से मुक्ति के गुर

महिला किसान पाठशाला के अलावा महिलाएं टी.वी. के माध्यम से भी किसानों के साथ अपने अनुभव बांटेंगी। वीरवार को लोकसभा चैनल पर सायं 5.30 बजे 'ज्ञान दर्पण' कार्यक्रम में, शुक्रवार को सायं 5.30 बजे 'साइंस दिस वीक' कार्यक्रम में तथा सोमवार को डी.डी. नैशनल चैनल पर सायं 6.30 बजे 'कृषि दर्शन' कार्यक्रम में किसानों को कीट नियंत्रण के माध्यम से जहर से छुटकारा पाने के गुर सिखाएंगी।

**18-09-2012**

# बेकार में कीटनाशकों पर खर्च रहे करोड़ों : डा. दलाल

## खाप प्रतिनिधियों को दी कीटों पर प्राकृतिक संतुलन बारे जानकारी

*कपास की फसल में कीटों बारे जानकारी देते डा. सुरेंद्र दलाल और मौजूद किसान।* (सुनील)

जींद, 18 सितम्बर (पंकेस): मंगलवार को निडाना गांव के कीट रिसर्च सैंटर में इसके संचालक डा. सुरेंद्र दलाल और यहां के कीट कमांडों ने खाप प्रतिनिधियों कुलदीप ढांडा, देवव्रत ढांडा समेत दूसरे लोगों को कपास की फसल में कीटों के प्राकृतिक संतुलन बारे जानकारी दी।

इसमें डा. सुरेंद्र दलाल ने बताया कि ज्ञान, विज्ञान और तकनीक देश के विकास की धूरी होती हैं। ज्ञान व विज्ञान को जनता पैदा करती और यह जनता के ही काम आता है। डा. दलाल ने कहा कि देश में 26 से भी ज्यादा कृषि विश्वविद्यालय हैं और इनकी स्थापना देश में तकनीक को बढ़ावा देने के लिए ही की गई थी। डा. दलाल ने कहा कि आज कृषि क्षेत्र में कीटनाशकों का जो प्रयोग बढ़ रहा है वह भी तकनीक का ही एक हिस्सा है। निडाना के किसानों ने कोई नई तकनीक अपनाने की बजाय कीट विज्ञान को अपना कर अपना खुद का कीट ज्ञान पैदा किया है। उन्होंने कहा कि कीट ज्ञान का मतलब फसल में कीटों के क्रियाकलापों को समझना व कीटों को परखना है। पाठशाला की शुरूआत फसल में कीट सर्वेक्षण से की गई। कीट कमांडो किसानों ने कीटों का सर्वेक्षण कर खाप प्रतिनिधियों के सामने फसल में मौजूद कीटों का आंकड़ा रखा। इस दौरान आस-पास के गांवों से आए किसानों ने कीट बही खाते में अपने-अपने कपास के खेत से तैयार किए गए फल, फूल व बोकी का आंकड़ा भी दर्ज करवाया। किसानों द्वारा दर्ज करवाए गए आंकड़े में फल की प्रति पौधा औसत 60 से 80, फूल की 1 से 3 तथा बोकी की 7 से 12 की औसत आई। इंटल कलां से आए किसान चतर सिंह ने बताया कि इस समय पौधे को फूल व बोकी की बजाए फल की ज्यादा चिंता रहती है ताकि भविष्य में भी उसकी वंशवृद्धि हो सके। इसलिए पौधा बोकी व फूल की बजाए फल की तरफ ज्यादा ध्यान देता है। इस समय पौधे को ज्यादा खुराक की जरूरत होती है। इसलिए किसानों को इस समय पौधे को पर्याप्त मात्रा में खुराक देने के लिए जिंक, यूरिया व डीएपी का छिड़काव करना चाहिए। किसान अजीत ने बताया कि जिंक, यूरिया व डीएपी के छिड़काव का प्रभाव 4 घंटे में ही नजर आने लगता है, जबकि जमीन में डाले गए खाद का प्रभाव 3 से 4 दिन बाद नजर आता है। अलेवा से आए किसान जोगेंद्र ने बताया कि उसकी पोली हाऊस में लगी शिमला मिर्च की फसल में ग्रास होपर का प्रकोप काफी बढ़ गया था। जिससे भयभीत होकर उसने फसल में कीटनाशक का स्प्रे किया, लेकिन कीटनाशक से भी अच्छा परिणाम नहीं मिला। इसके बाद उसने पोली हाऊस में मकड़ियां छोड़ दी और मकड़ियों ने बड़ी आसानी से ग्रास होपर को कंट्रोल कर लिया। किसान सुरेश ने बताया कि उन्होंने रामकली व चाबरी गांव में कीटनाशक रहित 57 एकड़ धान की फसल में 307 पौधों का निरीक्षण किया था। इसमें से मात्र 7 पौधों पर ही गोभ वाली सूंडियां थी जबकि जिन किसानों ने कीटनाशकों का प्रयोग किया है उनकी फसल में इन सूंडियों की तादात ज्यादा है। बैठक में आए खाप प्रतिनिधियों को स्मृति चिन्ह देकर उनका स्वागत किया गया। इस मौके पर बैठक में कुंडु खाप कालवा के प्रधान सुभाष कुंडु, प्रसिद्ध समाजसेवी देवव्रत ढांडा, बागवानी विभाग से डी.एच.ओ. डा. बलजीत भ्याणा व पेहवा से आए प्रगतिशील किसान शीतल राम भी मौजूद थे।

**04-09-2012**

# 'किसानों की जेब पर डाका डाल रही कीटनाशक निर्माता कंपनियां'

## निडाना में किसान खेत पाठशाला में की किसान-कीट विवाद पर चर्चा

निडाना गांव में खेत पाठशाला में कीटों का निरीक्षण करते विशेषज्ञ और खाप प्रतिनिधि व किसानों और खाप प्रतिनिधियों को संबोधित करते डा. देवेन्द्र शर्मा। (सुगौल)

जींद 4 सितम्बर(पंकेस): ज्यों-ज्यों कीटनाशकों का प्रयोग अधिक होता है, त्यों-त्यों कुदरत कीटों को भी उन कीटनाशकों से बचाव के लिए अधिक ताकत प्रदान कर देती है, जिससे 2-4 वर्ष बाद कीटनाशक बेअसर हो जाते हैं और कंपनियां फिर नए कीटनाशक तैयार करती हैं।

इस प्रकार नए-नए कीटनाशक व बीज तैयार कर कुछ मुनाफाखोर किसानों की जेबों पर डाका डालते हैं और इस प्रकार पूरी प्लानिंग के तहत किसानों को एक चक्रव्यूह में धकेला जाता है। यह बात विश्व विख्यात खाद्य एवं कृषि विशेषज्ञ डा. देवेंद्र शर्मा ने मंगलवार को निडाना में आयोजित किसान खेत पाठशाला में किसान-कीट विवाद पर किसानों के साथ चर्चा करते हुए कही। इस अवसर पर पाठशाला में खाप पंचायत की तरफ से दुल खाप प्रधान इंद्र सिंह दुल, खटकड़ खेड़ा खाप के प्रधान दलेल खटकड़, जाटू खाप प्रधान संदीप ढांडा, 84 खाप प्रधान भिवानी से राज सिंह घणघस, किसान क्लब के प्रधान फूल श्योकंद, बागवानी विभाग से डी.एच.ओ. डा. बलजीत सिंह याणा, मिट्टी एवं संरक्षण विभाग जींद से डा. मीना सिहाग भी विशेष रूप से मौजूद थी। पंचायत का संचालन खाप पंचायत के संचालक कुलदीप सिंह ढांडा ने किया।

डा. देवेंद्र शर्मा ने कहा कि कई वर्ष पहले आंध प्रदेश के किसानों ने भी निडाना के किसानों की तरह कीटनाशक रहित खेती की मुहिम चलाई थी। इसके परिणामस्वरूप आज आंध प्रदेश के 21 जिलों में 35 लाख एकड़ में कीटनाशक रहित खेती होती और इस दौरान उनकी पैदावार पर भी कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है। अब तो वहां की सरकार भी किसानों के पक्ष में उतर आई है। सरकार ने किसानों की इस मुहिम को अपने हाथ में लेते हुए 2013 का टारगेट 100 लाख एकड़ जमीन में कीटनाशक रहित खेती करने का टारगेट रखा है। शर्मा ने बताया कि आंध प्रदेश के किसानों द्वारा शुरू की गई इस मुहिम में वहां के कुछ एन.जी.ओ. भी आगे आए हैं। वहां के एक स्वयं सेवी महिला समूह ने किसानों की इस मुहिम के लिए 5 हजार करोड रुपए की राशि एकत्रित की है। उन्होंने बताया कि हमारी कमाई का 40-50 प्रतिशत पैसा तो हमारी बीमारी पर ही खर्च हो जाता है। डा. शर्मा ने कहा कि 1990-91 में जब अमरीका बीटी को भारत में लाना चाहते थे तो उस समय बीटी के बीज की कीमत सिर्फ4 करोड़ रुपए निर्धारित की गई थी, लेकिन अब 2004 से अब तक अमरीका बीटी के बीज के माध्यम से देश के किसानों से 6 हजार करोड़ रुपए कमा चुके हैं।

डा. शर्मा ने कहा कि थाली को जहर मुक्त करने की इस लड़ाई में आने वाले युग में निडाना के किसानों को याद किया जाएगा। ढांडा ने बताया कि गांव चिडोठ जिला भिवानी में हर 5वें घर में तथा भटिंडा की गली नंबर 2 के 10 घरों में से 9 घरों में कोई न कोई व्यक्ति कैंसर का मरीज है। किसान रमेश ने बताया कि किसान कीटनाशक के माध्यम से कीटों पर जैसे ही अटैक करता है तो कीट अपना जीवनकाल छोटा करना शुरू कर देते हैं तथा बच्चे पैदा करने की क्षमता को बढ़ा लेते हैं। इससे खेत में कीटों की संख्या कम होने की बजाए ओर अधिक बढ जाती है।

किसान अजीत ने बताया कि अंगीरा, जंगीरा, फंगीरा अकेले ही 98 प्रतिशत मिलीबग को कंट्रोल कर लेते हैं। किसान मनबीर ने बताया कि हमें पौधों की भाषा सीखने की जरूरत है। जब पौधों पर किसी शाकाहारी कीट का आक्रमण होता है तो पौधे मांसाहारी कीटों को बुलाने के लिए एक अलग तरह की सुगंध छोड़ते हैं और मांसाहारी कीट उस सुगंध के कारण फसल में शाकाहारी कीटों को खाने के लिए पहुंच जाते हैं। इस अवसर पर खाप प्रतिनिधियों ने 5 पौधों के पत्ते काट कर प्रयोग को आगे बढाया। पाठशाला के समापन पर सभी खाप प्रतिनिधियों को स्मृति चिहन भेंट कर सम्मानित किया गया।